April-May-June-2022 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Vol. 9, Issue 2

Multidisciplinary Issue

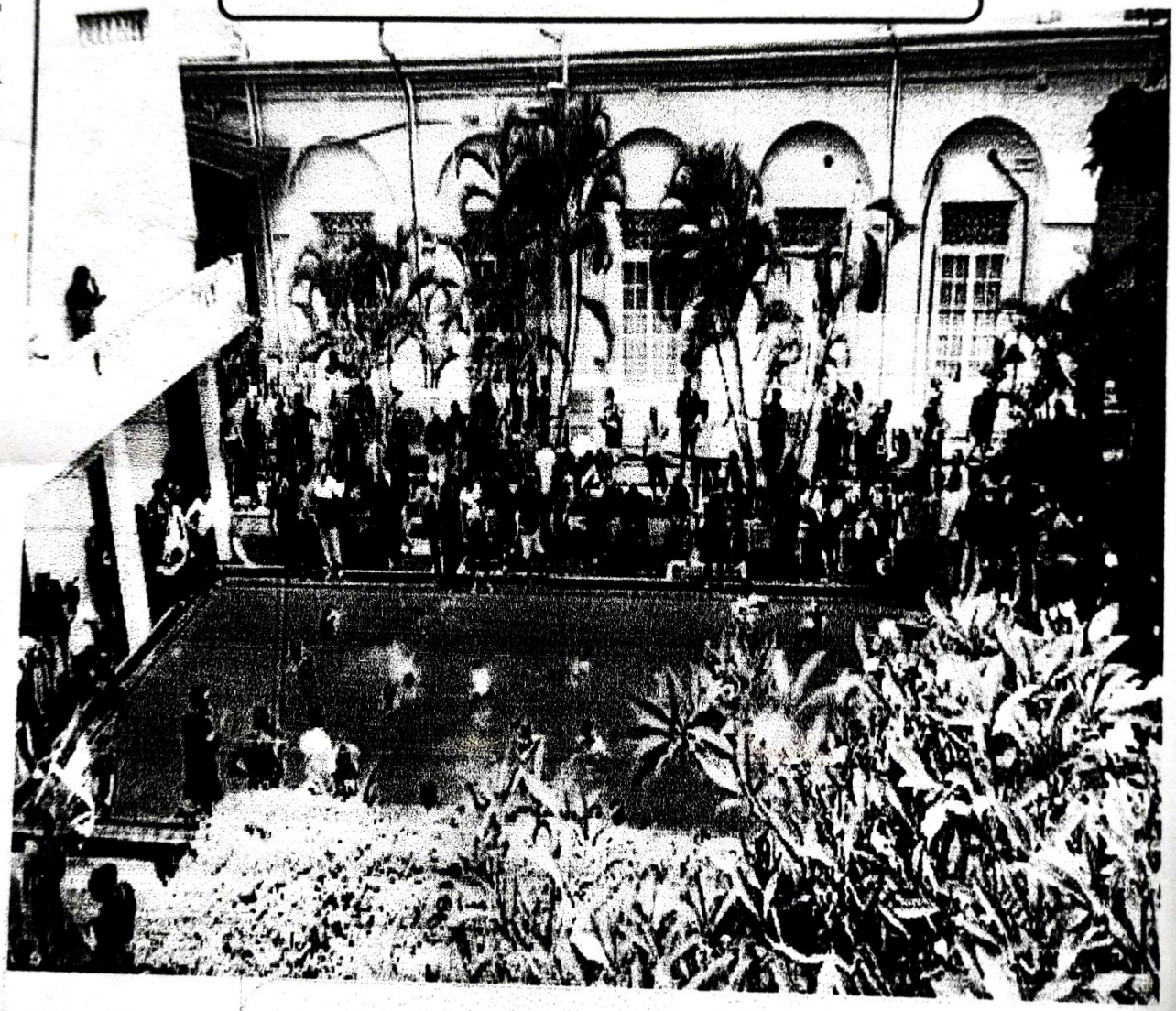

Chief Editor -

Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Nashikroad (English)
Kinwat (Hindi)
Bhusawal (Mar
Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATION

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	English Section		
1	A Critical Study of William Gibson's Novel *Neuromancer* as Cyberunk Text	Dr. Umaji Patil	05
2	Research and Post-Truth Age	Dr. Kiran Kumbhare	09
3	The Impact of Digital Media on the Print Media	Dr. Ramesh Darekar, Sandip Wadghule	14
4	Functions and Importance of E-Resource Management System for Providing Library E-Resources	Hitesh Brijwasi, Dr. Tushar Patil	17
5	Roles and Importance of Multimedia in Secondary & Higher Education	Prof. Chhaya Gadwe	21
6	Study of An Extraordinary Children and its Effect on Their Academic Achievement	Dr. S. Y. Patil, Anisha Gegum Shaikh Habib	27
7	Bibliometrics Analysis of Teachers in Engineering Field	Dr Sudhakar Thool	29
8	Effects of Online Teaching- Learning : Challenges and Remedies	Dr. Priya Murarkar	32
9	The Growth of Dairy Activity in India	Madhura Lavand, Dr. Nasir B. Shaikh	35
10	Urban Local Bodies and Swachh Bharat Mission : with Special Reference to Greater Hyderabad Municipal Corporation	Ramavath Sujatha	40
11	Impact of Cereal Production on Economy in India.	Miss. Pritee Pawar, Prof. Dr. L. G. Retwade	53
12	Preservation of Myxomycetous Biodiversity from Navegaon Bandh Dist. Gondia, Maharashtra (India) : I	N. V. Chimankar	56
13	Importance of Agriculture in Indian Economy	Madhura Lavand, Dr. Nasir B. Shaikh	62
	हिंदी विभाग		
14	लोकगीतो में व्यक्त संस्कृति का रूप	डॉ. विमुखभाई पटेल	65
15	प्रेमचन्द पूर्ववर्ती और प्रेमचन्द के उपन्यासों में अभिव्यक्त मूल्य	डॉ. भीमराव मानकरे	69
16	'झीनी झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास में चित्रित बुनकर समाज की समस्याएँ	डॉ. शकिला जब्बार मुल्ला	72
17	ज्ञानेंद्रपति की कविताओं में पर्यावरण चेतना	डॉ. संगिता चित्रकोटी	77
18	भारतीय एकता, अखंडता एवं आध्यात्मिकता का अद्भूत संगम : मानवता के महापुजारी राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज	डॉ. कमलिनी पशीने	82
19	नारी मुक्ति आंदोलन और स्त्री विमर्श	प्रा. शुभांगी खुडे	87
20	इक्कीसवी शती का हिंदी उपन्यास साहित्य : महानगरीय विमर्श (ममता कालिया के 'दौड' के संदर्भ में...)	डॉ. रमेशकुमार गवळी	91
21	जातीय उत्पीडन और संघर्ष को बयाँ करती सुशीला टाकभौरे की कहानियाँ	सायली डोळस	96
22	मेटाबॉलिक सिंड्रोम : इन्सुलिन प्रतिरोध के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. सुभाष दोंदे	104
23	भारतीय राजनीती और जाति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. शिखा जैन	111

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Peer Reviewed Journal | April-June-2022

ज्ञानेद्रपति की कविताओं में पर्यावरण चेतना

डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी
असोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
लक्ष्मी-शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी
E-mail -- schitrakoti@yahoo.com

ज्ञानेद्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों में से एक है। वे समकालीन हिन्दी कविता के एक गौरवपूर्ण स्तंभ है क्यों कि उन्होंने हिन्दी कविता को नया विजन दिया है। उन्होंने लगभग 10 साल तक सरकारी नौकरी की परंतु साहित्य के प्रति रुचि के कारण उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़कर अपने आप को काव्य लेखन के लिए समर्पित किया। अर्थात उनके जीवन का लक्ष्य केवल काव्य लेखन है। काव्य लेखन के लिए उन्होने मुक्तछंद का उपयोग किया इसीलिए उन्हे 'निराला परंपरा' का कवि कहा जाता है। उनके कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। जैसे- 'आँख हाथ बनते हुए', 'शब्द लिखने के लिए ही यह काग़ज बना है', 'गंगातट', 'संशयात्मा', 'भिनसार', 'कवि ने कहा', 'मनु को बनाती मनई', 'गंगा-बीती' और 'कविता भविता' आदि। 'एकचक्रानगरी' उनका काव्य-नाटक है और 'पढ़ते-गढ़ते' में उनके कथेतर गद्य का संकलन हुआ है। 'संशयात्मा' कविता-संग्रह के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्राकृतिक संपदा मनुष्य जीवन के लिए वरदान है परंतु मानव प्रकृति पर अनियंत्रित हस्तक्षेप कर रहा है जिससे प्रकृतिक संपदा का शोषण बढ़ रहा है। जल-थल संसाधनों के अवैज्ञानिक प्रबंधन से समस्त जीव सृष्टि खतरे में है। ज्ञानेद्रपति की अनेकों कविताओं के केंद्र में पर्यावरणीय चिंता है। उनकी कविता पर्यावरण ह्रास और प्रदूषण को चित्रित तो करती ही है साथ ही भविष्यकाल में सुदृढ़ पर्यावरण के लिए आवश्यक उपाययोजनाओं की ओर भी संकेत करती है।

ज्ञानेद्रपति अपनी **नदी और साबुन** कविता की सहायता से हमारा ध्यान प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की ओर आकर्षित करते है। नदी को दुबली और मैली कुचली देखकर वे चिंतित होते है। इस कविता में साबुन की टिकिया औदोगिक पूंजीवाद की बिटियाँ है। साबुन के इस्तमाल से पानी के पोषक तत्त्वों का अंत होता है। अन्य कोई भी जीव नदी का दुरुपयोग नहीं करते पर मानव स्वार्थी बनकर नदी का सत्यानाश करता है। मानव ने अपनी सुख-सुविधाएं बढ़ाने के लिए कई कारखाने बनाए। उनका विषैला जल नदी को प्रदूषित करता है। गंगा का उदय हिमालय से होता है। हिमालय एक सजग संरक्षक के रूप में है। इतने सजग संरक्षक होते हुए भी नदी एक छोटीसी नदी के सामने हार मान लेती है। उन्ही के शब्दों में –

"एक नीली साबुन-बट्टी
वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी का बहुप्रचलित साबुन है।
दुखियारी महतारी है गंगा
उसका जी काँपता है डर से उसकी प्रतिद्वंद्वी हथेली - भर की
वह जो साबुन की टिकिया है
इजारेदार पूँजीवाद की बिटिया है
उसका बलाबली झाग उठने से पहले गंगा के दिल में हौल उठता है।" ... 1

गंगास्नान कविता में कवि ने एक वृदधा की गंगास्नान की आखरी इच्छा को चित्रित किया है। इस वृदधा के मन में गंगा प्रति आस्था का भाव है। अर्थात सभी भारतीयों के मन में गंगा के प्रति आस्था का भाव है क्यों कि सभी

नदियों में गंगा की खास महिमा है, गंगा मैया का धार्मिक महत्त्व है। कहा जाता है गंगा स्नान, पूजन और दर्शन से सारे पाप धूल जाते है, व्याधियों से मुक्ति होती है परंतु अब गंगातट पर बसे औद्योगिक नगरों से गंदगी सीधे गंगा नदी में नालों द्वारा मिलती है। दरअसल कवि का मन मानता ही नहीं कि गंगा मैली हो चुकी है। इन्ही भावों को वे इस तरह व्यक्त करते है----

"वह बूढ़ी मैया दूर से आयी
तुम क्या जानो
अपने प्राणों तक प्रक्षलित कर रही है,
पवित्र कर रही है।
महाप्रस्थान-प्रस्तुत डगमग पावों वाली वह बूढ़ी मैया
तुम क्या जानो, क्यों कि तुम्हारे लिए नहीं बची है कोई पवित्र नदी
तुम्हारी सारी नदिया अपवित्र हो गयी है-विषाक्त
तुम्हारे हृतपिंड कि गंगोत्री सुख ही गयी है
पीछे और पीछे खिसकती आखिरकार ।" ...2

गंगा प्रदूषण को रोकने हेतु मा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 2014 में **नमामि गंगा** परियोजना आरंभ की जिसके तहत गंगा किनारे के 48 औद्योगिक इकाइयों को बंद करने का आदेश दिया। जिसके कारण गंगा प्रदूषण पर काफी हद तक रोक लगी है।

पॉलीथीन सभ्यता के विकराल ने बड़ा संकट खड़ा किया है। प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है जो जलथल वायु सभी के लिए हानिकारक है। प्लास्टिक का कचरा हजारों सालों तक नष्ट नहीं होता। प्लास्टिक और पॉलीथीन आदि फेंकने से पर्यावरण का धीरे=धीरे विघटन होने लगता है। भूमि की उर्वरा शक्ति कम होती है। पानी में ये कचरा जाने से जल प्रदूषित होता है और जलीय जीवों पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। वन्य और पालतू जानवरों के पेट में प्लास्टिक के अंश मिलना आम बात बन गयी है। "पिछले महिने **द जर्नल फॉर नेचर कोंझरवेशन** में प्रकाशित शोधकार्य में कहा गया है कि उत्तराखंड के जंगल के हथियों कि विष्ठा में प्लास्टिक और अन्य मानवनिर्मित चीजे मिली। ऐसे ही अन्य जानवरों के पेट में भी प्लास्टिक जाने से उनकी मौत हो गयी है।" ... 3 एक अतः इस पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। इसी की ओर संकेत करती ज्ञानेन्द्रपति की **पॉलीथीन** एक बहुत ही महत्वपूर्ण कविता है।

" पॉलीथीन ! पॉलीथीन !
तंग हूँ मैं इस पॉलीथीन से
तंग पड़ती जा रही है जगह
जीवों को धरती पर, बीजों को धरती पर
इसके कारण
जिधर देखो उधर पालिथीन
पॉलीथीन की मुट्ठी में बंद है बाजार
जिस तरह बाजार की मुट्ठी में बंद है हम " ...4

पॉलीथीन का बढ़ता हुआ उपयोग न केवल वर्तमान के लिए बल्कि भविष्य के लिए भी खतरनाक होता जा रहा है फिर भी वह हमारे समय की सभ्यता बन गयी है। वह चिरजीवा एवं मरजीवा सत्य है। पॉलीथीन पूरे विश्व के

लिए एक गंभीर समस्या होती जा रही है इसीलिए 3 जुलाई को International Plastic Bag Free Day पूरे विश्व में मनाया जाता है।

ज्ञानेद्रपति की **गिद्धवृक्ष** कविता पर्यावरण विमर्श से ही जुड़ी है। पर्यावरण प्रदूषण का दुष्प्रभाव पशु-पक्षियों पर पड़ता है। मानव के हिंसात्मकता के कारण गिद्ध प्रजाति लुप्त हो रही है।

" शायद गिद्ध भोज्य पशु मांस में
पैबस्त किटकनाशक के विषवृक्ष
असमय भंगुर
ओहह कबसे नहीं गूंजी है
किलकारियाँ
किसी गिद्ध शासक की।" ... 5

अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण संघ (आईयूसीएन) ने 1217 प्रजातियों के विलुप्त हो जाने की आशंका व्यक्त की है। आईयूसीएन के अनुसार भोजन की कमी घटते आवास और विद्युत तार पक्षियों के लिए खतरा बन गए है। आईयूसीएन के रेड लिस्ट में कहा गया है कि वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गिद्धों कि संख्या तेजी से कम हो रही है। पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में गिद्धों की भूमिका महत्वपूर्ण है। गिद्ध मरे जानवरों के अवशेषों को खाकर पृथ्वी की गंदगी को नष्ट करते है जिसके कारण बहुत सी बिमारियाँ व रोगों के संक्रमण को रोका जाता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से गिद्ध प्रजाति विलुप्त होने के कगार पर है। ऊपर की पंक्तियों में कवि ने किटकनाशक दवाओं का उल्लेख किया है। पशुओं के इलाज के दौरान उन्हें दी जाने वाली दर्द निवारक दवा डायक्लोफेनिक ही गिद्धों के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। डायक्लोफेनिक से गिद्धों की मौत होने की जानकारी करीब 18 साल पहले ही मिल गई थी। भारत सरकारने डायक्लोफेनिक पर प्रतिबंध लगाया है।

गिद्ध कि तरह अनेक प्रजातीया लुप्त हो रही है। लुप्त होने वाली प्रजातियों को बचाना हो तो उसपर विचार करना आवश्यक है। ज्ञानेन्द्रपति पर्यावरण प्रेमी कवि रहे है इसलिए लुप्त होनेवाली प्रजातियों को लेकर वे चिंतित होते है। गिद्ध की तरह लुप्त हो रहे भालुओं के प्रति भी अपनी चिंता **टेड्डी बियर में बचे हुए भालू** कविता में दर्ज करते है।

" नहीं, नहीं जान सकेगी बच्चीयां इसे
और न जान पाएंगे उनके प्यारे पापा
और पीढ्ी-दर-पीढ्ी
जंगली प्रदेशोंसे और बर्फानी प्रदेशों से
अंततः मीट गए भालू
टेड्डी बियर बनकर दुकानों के शो केसों में बैठे रहेंगे अतितातीत" ... 6

कवि को डर है की अब भालू केवल दुकानों में टेड्डी बियर के रूप में देखने को मिलेंगे क्यों कि आर्कटिक सर्कल अन्य ग्रहों कि तुलना में दोगुना तेजी से गर्म हो रहा है परिणाम स्वरूप बर्फ के मैदान पिघल रहे है। जिसके कारण भालुओं के आवास नष्ट हो रहे है। इसलिए भालुओं कि जिंदगी पर बहुत गंभीर खतरा मंडरा रहा है।

मनुष्य के अस्तित्व के लिए पानी एक प्रमुख प्राकृतिक संसाधन है। उसका उपयोग विवेकता से करना चाहिए। जल है तो कल है इस उक्ति से पानी की महत्ता सामने आती है। परंतु जल संरक्षण को लेकर लोगों के बीच जागरूकता का अभाव है। जल का दुरुपयोग लगातार बढ़ रहा है। जिससे जल संकट की स्थिति निर्माण हो गयी है। भूमिगत जल के स्तर में भी गिरावट आयी है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या, फैलते शहरीकरण, बढ़ते

औद्योगीकरण के अलावा ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न जलवायु परिवर्तन भी इसके लिए जिम्मेदार है। ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न जलवायु परिवर्तन से मानसून का चक्र बिगड़ गया है। जिससे बारिश की मात्रा कम हो गयी है। दूसरी ओर वृक्षों की अंधाधुंध कटाई व पहाड़ों के अवैध खनन से जंगल व पहाड़ी क्षेत्र कांक्रीट के जंगलों में बदल गए है। परिणाम स्वरूप बारिश का पानी भूमि के अंदर समाहित नहीं हो पाता। अतः पानी की कमी पूरे विश्व के लिए गंभीर चिंता का विषय है। कवि अपनी **प्यासा कुआँ** कविता में आने वाले जल संकट पर व्यथित होकर अपनी वेदना व्यक्त करते है---

" प्यास बुझाता रहा था जाने कब से
बरसों बरस से वह कुआँ
लेकिन प्यास उसने तब जानी थी जब
यकायक बंद हो गया जल-सतह तक बाल्टियों का उतरना "...7

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

" एक गहरा सा कूड़ादान है वह अब
उसकी प्यास सिसकी की तरह सुनी जा सकती है
अब भी
अगर तुम दो पल औचक बुढ़ाए कुऐं के पास
खड़े होओ चुप " ...8

युगों से सबकी प्यास बुझाने वाला कुआं अचानक खुद प्यासा बन गया है क्यों कि अचानक उसकी जलसतह से पानी आना बंद हो गया है। और अब वह केवल एक कूड़ादान बन गया है पर किसी को इस बात से कुछ लेना देना नहीं है।

अपनी **बीज व्यथा** कविता में कवि एक नया प्रश्न खड़ा करते है। भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि का स्थान भारतीय अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण है। कृषि व्यवस्था में बीजों की भूमिका अहं होती है। खेती की नीव बीज ही होते है। इसलिए बीज गुणवत्तापूर्ण होने चाहिए क्यों की वह सामान्य बीजों की तुलना में अधिक मात्रा में कृषि उपज देता है। कहते है न जैसा बोओगे वैसा काटोगे इसलिए अच्छी किस्म के बीजों का उत्पादन जरूरी है परंतु आज लोग संकर प्रजातियों का उपयोग करके अधिक से अधिक पैदावार पाना चाहते है। संकर बीजों से उत्पादित फसल में पोषक तत्त्वों की कमी होती है। तथा इन पर केवल रसायनिक खाद का ही उपयोग किया जा सकता है। सब्जी मंडी में अलग-अलग रंग-रूपों की सब्जिया देखकर सबका मन मोहित होता होगा। लेकिन यह कोई नहीं सोचता की इसपर जमकर रासायनिक खाद और कीटकनाशक दवाओं का इस्तमाल किया गया है। इससे समय से पूर्व फसल तयार होती है और उसकी उपज भी बहुत अधिक होती है। रसायनिक खाद और कीटकनाशक दवाओं से सब्जियों के अंदर के विटामिन खत्म होते है। इससे लोगों को फायदा कम नुकसान अधिक होता है। संकर, रसयनिक खाद और दवाइयों से होनेवाले दुष्परिणामों से सचेत करने की कोशिश बीज व्यथा कविता में कवि करते है–

" दुबले एकल भारतीय बीजों को बहियाकर
आते है वे आक्रांता बीज टिड्डी दलों की तरह
छाते आकाश
भूमि को अंधराते
यहाँ की मिट्टी में जड़े जमाने
फैलने-फूलने
रासायनिक खादों और किटकनाशकों के जहरीले संयोत्रों की " ...9

हमारी पारंपारिक देसी किस्में अपने गुणों स्वाद और पोषक तत्त्वों से परिपूर्ण थी। पर हरित क्रांति के नामपर मनुष्यने अपनी शारीरिक और मानसिक हानी को आमंत्रित किया। रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से टीबी, कैंसर जैसे कई बिमारियाँ फैलने लगी। पर अब सभी को इसका एहसास हो गया है। इसलिए लोग फिरसे पारंपरिक खेती, जैविक खाद, देसी बीज की ओर बढ़ रहे है। ओड़िशा के काटापाली गांव के किसान सुदाम साहू ने, साल 2001 में शौक़ के तौर पर देसी बीज इकट्ठा करने का काम शुरू किया था लेकिन आज यह काम उनके जीवन का एक मिशन बन चुका है। वह अपने क्षेत्र के किसानों को खेती में स्वदेशी बीजों का उपयोग करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। बीज रक्षक सुदाम ने पिछले 19 सालों में, 1000 से अधिक किस्मों के बीजों का संग्रह और भंडारण किया है। उन्होंने बरगढ़ में अपना खुद का बीज बैंक भी खोला है। इसी कार्य के कारण उन्हें 'जगजीवन राम इनोवेटिव किसान' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। ओड़ीशा के कोरापुट जिले की कमला पुजारी को भी देसी बीजों के सरक्षण के लिए पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया है।

उपर्युक्त विवेचन के बाद निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ज्ञानेंद्रपति ने अपने काव्य में पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित अनेक प्रश्नों और मुद्दों को समाज के सामने उठाया है और पर्यावरण को बचाने को लेकर अच्छी कोशिश की है । जैसे जैसे नयी सभ्यताओं ने विकास किया है वैसे वैसे नयी नयी समस्याएँ हमारे सामने आयी है। उन समस्याओं को तथा पर्यावरण को लेकर जो आधुनिक चिंतन हुआ है उसका विस्तार उनकी कविताओं में प्राप्त होता है। ज्ञानेद्रपति एक सजग रचनाकार है जो निरंतर हमें जागा रहे है, सावधान कर रहे है। ऐसी स्थिति में हम सभी को गंभीरतापूर्वक सोचना है कि एक जिम्मेदार नागरिक बनकर पर्यावरण की रक्षा करे।

संदर्भ ग्रंथ सूची —

1. डॉ. ए. एस. सुमेश, समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श, अमन प्रकाशन कानपुर, दूसरी आवृत्ति 2020 पृष्ठ – 31
2. वहीं पृष्ठ – 31
3. दैनिक लोकसत्ता दि. 28 जून 2022
4. डॉ. ए. एस. सुमेश, समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श, अमन प्रकाशन कानपुर, दूसरी आवृत्ति 2020 पृष्ठ – 32
5. वहीं पृष्ठ – 34
6. hindisamay.com (कविता - टेड्डी बियर में बचे हुये भालू)
7. hindisamay.com (कविता – प्यासा कुआँ)
8. hindisamay.com (कविता - प्यासा कुआँ)
9. hindisamay.com (कविता – बीज व्यथा)